Volume: 5 Issue: 2 Pages: 42-45

डिजिटल युग में लोक साहित्य और संस्कृति

*[1] रितेश कुमार सेन

*[1] ग्रंथपाल, स्वामी विवेकानंद शासकीय महाविद्यालय, लखनादौन जिला-सिवनी, मध्य प्रदेश भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 09/Jan/2026
Accepted: 06/Feb/2026

***Corresponding Author**
रितेश कुमार सेन
ग्रंथपाल, स्वामी विवेकानंद शासकीय महाविद्यालय, लखनादौन जिला-सिवनी, मध्य प्रदेश भारत।

सारांश
डिजिटल युग में लोक साहित्य और संस्कृति की चर्चा भारत की प्राचीन संस्कृति के विकास से शुरू होती है, जिसमें लोक साहित्य जैसे लोकगीत, कथाएँ और कहावतें शामिल हैं। डिजिटल तकनीकों के माध्यम से, लोक साहित्य को सहेजना और साझा करना आसान हुआ है, जैसे डिजिटल आर्काइविंग और सोशल मीडिया का उपयोग। हालांकि, डिजिटल युग ने मानसिक स्वास्थ्य, गोपनीयता, और सामाजिक जुड़ाव पर नकारात्मक प्रभाव भी डाला है। इसके बावजूद, यह लोक साहित्य के संरक्षण, वैश्विक पहुंच, और लोक कलाकारों के लिए नए व्यावसायिक अवसर प्रदान कर रहा है। भारत सरकार द्वारा कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जैसे शताब्दी महोत्सव योजना और पांडुलिपियों पर राष्ट्रीय मिशन जो की यह डिजिटल माध्यमों से लोक संस्कृति के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मुख्य शब्द: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, लोक साहित्य, लोक संस्कृति, सोशल मीडिया, एन.लिस्ट, शोध सिंधु, सी.डेक., वेबकॉमिक्स, ई-ज्ञानकोश।

प्रस्तावना:

भारत का इतिहास अत्यंत प्राचीन है, भारतीय उपमहाद्वीप विश्व की सबसे प्राचीन लोक परंपराओं वाला क्षेत्र है। जो प्रागैतिहासिक काल से शुरू होकर सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग 3000-1500 ईसा पूर्व) के साथ विकसित हुआ, फिर वैदिक काल, मौर्य और गुप्त साम्राज्यों के "स्वर्ण युग" (विज्ञान, कला, साहित्य में प्रगति), मध्यकाल में मुस्लिम शासकों के आगमन और ब्रिटिश औपनिवेशिक काल (1857 के विद्रोह और स्वतंत्रता संग्राम के साथ) से होते हुए 15 अगस्त, 1947 को आजादी और 1950 में गणतंत्र बनने तक फैला है, जो विविध सभ्यताओं और सतत विकास की कहानी कहता है। यहाँ के लोकगीत, कथाएँ, कहावतें, किवदंतियाँ, नृत्य और लोककला न केवल जीवन-मूल्यों को प्रकट करती हैं, बल्कि सामूहिक ऐतिहासिक स्मृतियों का संरक्षण करती हैं। आज का युग वैज्ञानिक युग है जिसमे परंपरागत लोक साहित्य को डिजिटल तकनीक के माध्यम से डिजिटल फार्मेट में परिवर्तित कर परोसा जा रहा है जिससे लोक साहित्य को एक धरोहर के रूप मे सहेज कर रखना आसान हो गया है, एवं हस्तलिखित पांडुलिपियों को पुनर्जीवित करने का आसान तकनीक है, तथा एक ही समय मे अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करना एक से अधिक प्रतिया बनाना काम जगह में रखना जिससे उसकी लागत मे कमी आती है।

लोक साहित्य और लोक संस्कृति की परिभाषा

लोक संस्कृति

लोक संस्कृति एक व्यापक अवधारणा है, जो की भौतिक और अभौतिक दोनों पहलुओ को समाहित करती है, लोक संस्कृति किसी समुदाय विशेष की जीवन शैली, रीति-रिवाज, कला और ज्ञान शामिल करती है। उदाहरण के लिए विवाह की रश्मे, खान पान की आदते, वेशभूषा, लोक वाद्य यंत्र दैनिक जीवन के कार्य पारंपरिक नृत्य एवं संगीत, रीति–रिवाज, पर्व एवं उत्सव, हस्तशिल्प, चित्रकला, वस्त्र, लोक शैली, कृषि-परंपराएँ, मूल्य, आचार-विचार और सामुदायिक आस्था इनका मुख्य आधार ग्रामीण, आदिवासी और क्षेत्रीय समुदाय हैं।

लोक साहित्य

लोक साहित्य उन लोक कथाओ (जापानी किट्स्यून), लोक गीतों (सोहर, कजरी, आल्हा, बिरहा), कहावतों, पहेलियों, लोकोतीयों ('अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत') और नाटकों (रासलीला, नौटंकी) का समूह है, जो सामान्य जनता के द्वारा अपनी पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित की जाती है यह सभी किसी विशेष संस्कृति, जीवनशैली और मान्यताओ को प्रदर्शित करते है, और यह निश्चित लिखित रचना नहीं बल्कि जनसमूह की सहज अभिव्यक्ति होती है।

डिजिटल युग और लोक साहित्य

डिजिटल युग से तात्पर्य हमारे दैनिक जीवन, कार्य और सामाजिक बातचीत में डिजिटल तकनीकों (इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया) के समावेश से निर्मित साझा मूल्यों, व्यवहारों और प्रथाओं से है। यह तकनीक के माध्यम से ज्ञान साझा करने, रचनात्मकता, संचार को तेज़ करने और ऑनलाइन समुदायों का निर्माण करने की एक सामूहिक संस्कृति है, जो पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं में महत्वपूर्ण बदलाव ला रही है। डिजिटल तकनीक न केवल व्यक्तिगत जीवन को सुगम बनाती है, बल्कि व्यावसायिक दुनिया में ग्राहक-केंद्रितता और चपलता लाने के लिए भी अनिवार्य है। यह कला और सांस्कृतिक विरासत तक डिजिटल पहुंच को भी बढ़ावा देती है।

- **डिजिटल संरक्षण (Digital Archiving):** डिजिटल सामग्री की दीर्घकालिक सुलभता, प्रामाणिकता और उपयोगिता सुनिश्चित करने की एक सतत प्रक्रिया है, ताकि भविष्य में भी फाइलों को पढ़ा और उपयोग किया जा सके। यह तकनीकी बदलावों और फाइलों के अप्रचलित होने से बचाने के लिए प्रबंधन, मेटाडेटा और भंडारण का उपयोग करता है। यह डिजिटल सामग्री की अखंडता बनाए रखने के लिए आवश्यक है, जिसमें UNESCO और C-DAC जैसी संस्थाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत सरकार ने डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण (DPDP) अधिनियम 2023 पारित किया है, जो डेटा के उपयोग को नियंत्रित करता है। C-DAC (सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग) डिजिटल संरक्षण के लिए उपकरण और मानक विकसित करता है।
- **सोशल मीडिया का प्रभाव:** सोशल मीडिया के माध्यम से दोस्तों, परिवार और दुनिया भर के लोगों से जुड़ना आसान बनाता है, जिससे सामाजिक दायरे का विस्तार होता है, एवं महत्वपूर्ण जानकारी और समाचार तुरंत साझा किए जा सकते हैं, जिससे नागरिक जुड़ाव बढ़ता है और लोगों को अपनी राय और विचारों को व्यक्त करने का मंच मिलता है, तथा समान रुचियों वाले लोगों के समूह बनाने और सहयोग करने में मदद करता है. YouTube, Instagram, Facebook, Moj, Josh जैसे प्लेटफॉर्म ने गाँवों के कलाकारों को राष्ट्रीय/वैश्विक दर्शक दिए आर्थिक आय का नया साधन उपलब्ध कराया है।
- **लोक कथाओं का पुनर्पाठ:** डिजिटल तकनीक मे उपयोग हो रहे विभन्न सॉफ्टवेयर के माध्यम से हमारी लोक संस्कृति और प्राचीन लोक कथाओं को डिजिटल आडिओ फार्म मे बदलकर और डिजिटल एनिमेशन से जोड़कर हमारे बच्चों को प्रेरित किया जा रहा है, जिससे बच्चे हमारे वीर योद्धधो के जीवन परिचय एवं नैतिक शिक्षा या नैतिक विज्ञान के ज्ञान से अवगत हो रहे है, यह एक सरल व मनोरंजन का माध्यम है।
- **डिजिटल कॉमिक्स:** डिजिटल कॉमिक्स इलेक्ट्रॉनिक रूप से पढ़ने योग्य कॉमिक्स हैं, शारीरिक दुकानों में जाए बिना, रिलीज़ के दिन ही उपलब्ध हो जाती हैं और जिसे भौतिक संग्रहण (physical storage) की आवश्यकता नहीं होती, जिससे स्थान की बचत होती है। डिजिटल कॉमिक्स विभिन्न फॉर्मैट जैसे: .cbz, .cbr, .pdf, और ePub जैसे डिजिटल प्रारूप में प्राप्त किया जा सकता है, वेबकॉमिक्स (Webcomics) विशेष रूप से मोबाइल के लिए डिज़ाइन की गई, इन्हें नीचे की ओर स्क्रॉल (scroll) करके पढ़ा जाता है।
- **डिजिटल पत्रकारिता और लोक भाषाएँ:** डिजिटल पत्रकारिता ने स्थानीय और लोक भाषाओं को मुख्यधारा में लाकर सूचना के लोकतंत्रीकरण की क्रांति ला दी है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के प्रसार से हिंदी, भोजपुरी, तमिल, मराठी, बंगाली जैसी क्षेत्रीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री और समाचारों का चलन बढ़ा है, जो स्थानीय मुद्दों को प्राथमिकता देते हैं। सोशल मीडिया ने हर व्यक्ति को रिपोर्टर बना दिया है, जिससे स्थानीय भाषाओं में समाचार और वीडियो (जैसे YouTube, Instagram Reels) का तेजी से प्रसार हो रहा है।
- **ई-शोध और शिक्षण संसाधन:** ई-शोध और शिक्षण संसाधन डिजिटल रूप से सुलभ अकादमिक सामग्री हैं, जैसे ई-जर्नल, ई-बुक्स, डेटाबेस और वीडियो लेक्चर, जो उच्च शिक्षा और अनुसंधान में सहायता करते हैं। ई-शोधसिंधु (E-ShodhSindhu) उच्च शिक्षा संस्थानों विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों को वैज्ञानिक और तकनीकी पत्रिकाओं और डेटाबेस का उपयोग करने के लिए 10,000 से अधिक जर्नल और 1 लाख से अधिक ई-पुस्तकें प्रदान करता है, एन-लिस्ट (N-LIST) यह कॉलेज घटक के रूप में कार्य करता है, जो 6,000 से अधिक ई-पत्रिकाओं और 1,64,300 से अधिक ई-पुस्तकों तक पहुँच प्रदान करता है, ई-ज्ञानकोश (eGyanKosh) ओपन और डिस्टेंस लर्निंग (ODL) के लिए एक राष्ट्रीय डिजिटल भंडार है, जो भारत में सबसे बड़ा शैक्षणिक भंडार है, एनडीएल (National Digital Library of India - NDL) यह 6 लाख से अधिक ई-पुस्तकों सहित विभिन्न विषयों में बहुभाषी संसाधन प्रदान करता है, ऑडियो-वीडियो और इंटरैक्टिव संसाधन CIET-NCERT पॉडकास्ट, ऑडियो बुक्स, और अन्य दृश्य-श्रव्य उपकरण प्रदान करता है, जो सीखने की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाते हैं। इन सभी संसाधनों से छात्र और शिक्षक कभी भी और कहीं से भी शोध सामग्री का उपयोग कर सकते हैं, ये संसाधन भौतिक पुस्तकों की तुलना में कम खर्चीले हैं और उच्च शिक्षा में एनईपी (NEP) 2020 की सिफारिशों के अनुरूप हैं, जो सक्रिय शिक्षा को बढ़ावा देते हैं तथा ये अकादमिक और अनुसंधान क्षमता को बढ़ाते हैं।

डिजिटल युग के नकारात्मक प्रभाव

डिजिटल युग ने सुविधा तो दी है, लेकिन इसके नकारात्मक प्रभावों में मानसिक स्वास्थ्य (चिंता, तनाव), शारीरिक समस्याएं (आंखों में खिंचाव, मोटापा), और सोशल मीडिया की लत मुख्य हैं। इससे साइबरबुलिंग, व्यक्तिगत डेटा की चोरी, और गलत सूचनाओं का प्रसार भी बढ़ा है। इसके अलावा, स्क्रीन टाइम बढ़ने से लोगों का वास्तविक सामाजिक मेलजोल और शारीरिक गतिविधियां कम हो गई हैं।

- **मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर असर:** लंबे समय तक स्क्रीन देखने से आंखों में तनाव, खराब शारीरिक मुद्रा, मोटापा और गतिहीन जीवनशैली जैसी बीमारियां बढ़ रही हैं। सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से अकेलापन, तनाव और अवसाद (डिप्रेशन) जैसी मानसिक समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।
- **गोपनीयता और साइबर सुरक्षा:** व्यक्तिगत डेटा लीक, हैकिंग और अनधिकृत पहुँच का खतरा हमेशा बना रहता है।
- **साइबरबुलिंग और गलत जानकारी:** सोशल मीडिया के जरिए लोगों को धमकाना, अपमानित करना या गलत जानकारी (फर्जी खबरें) फैलाना आसान हो गया है।
- **सामाजिक जुड़ाव में कमी:** वर्चुअल दुनिया में ज्यादा व्यस्त होने के कारण, आमने-सामने की बातचीत कम हो गई है, जिससे रिश्तों में गलतफहमियां पैदा हो सकती हैं।
- **बच्चों पर प्रभाव:** छोटे बच्चों में स्क्रीन की लत लगने से उनका मानसिक और शारीरिक विकास प्रभावित हो रहा है।
- **काम के तरीकों में बदलाव:** लोग अक्सर बिना सोचे-समझे जानकारी का उपयोग करते हैं, जिससे वास्तविक समझ कम हो रही है।
- **संसाधनों की कमी:** अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों एवं ग्रामीण समुदायों के पास अभी भी प्रौद्योगिकी की सीमित पहुँच है।

अवसर और संभावनाएँ

डिजिटल युग ने लोक साहित्य और संस्कृति के संरक्षण, प्रसार और पुनरुद्धार के अभूतपूर्व अवसर प्रदान किए हैं। सोशल मीडिया, ई-पुस्तकों, पॉडकास्ट और वर्चुअल रियलिटी (VR) के माध्यम से लोककथाओं, नृत्यों और संगीत को वैश्विक मंच मिला है। नवीन शोध के अनुसार अब तकनीक से पारंपरिक विरासतों का दस्तावेजीकरण और नई पीढ़ी के लिए उनका डिजिटलीकरण आसान हो गया है।

वैश्विक पहुँच: सोशल मीडिया (YouTube, Instagram) के जरिए लोक नृत्य, संगीत और कथाएं दुनिया भर में तुरंत लोकप्रिय हो रही हैं।

दस्तावेजीकरण और संरक्षण: डिजिटल आर्काइविंग (ऑनलाइन संग्रहालय) पुरानी कलाओं और भाषाओं को नष्ट होने से बचा रही है। नई विधाएं: लोककथाओं को डिजिटल माध्यमों से वीडियो गेम, इंटरैक्टिव बुक्स और एआई (AI) आधारित कहानी सुनाने की कला में बदला जा रहा है।

व्यापार और आजीविका: कलाकार अपने काम को डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए सीधे जनता तक पहुँचाकर अपनी कला का मौद्रिकरण कर सकते हैं।

लोक शिक्षा: लोक नर्तकों और गायकों के वीडियो का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में सांस्कृतिक ज्ञान प्रदान करने के लिए किया जा रहा है।

शासकीय योजनाएं

कला और संस्कृति को बढ़ावा देने और प्रसार करने के लिए भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा चलाई जा रही योजनाएं निम्न लिखित है

- **शताब्दी महोत्सव और वर्षगाँठ योजना:** यह देश के लिए ऐतिहासिक महत्व की प्रतिष्ठित हस्तियों और घटनाओं की 125वीं/150वीं/175वीं आदि शताब्दी महोत्सव और विशेष वर्षगांठ मनाने के लिए है। स्मरणोत्सव 100/125/150 आदि वर्षों के पूरा होने पर शुरू होता है और एक वर्ष की अवधि तक जारी रहता है।
- **कला संस्कृति विकास योजना:** नाटक, रंगमंच समूहों, नृत्य समूहों, संगीत कलाकारों, लोक रंगमंच और संगीत और प्रदर्शन कला गतिविधियों की अन्य शैलियों को वित्तीय सहायता प्रदान करके देश की कला और संस्कृति को बढ़ावा देना और प्रसारित करना इसका उद्देश्य है।
- **संग्रहालय का विकास:** केंद्र सरकार, राज्य सरकारों, सोसायटियों, स्वायत्त निकायों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, स्थानीय निकायों और ट्रस्टों द्वारा सोसायटी अधिनियम के तहत क्षेत्रीय, राज्य और जिला स्तर पर पंजीकृत नए संग्रहालयों की स्थापना और मौजूदा संग्रहालयों के सुदृढ़ीकरण और आधुनिकीकरण के लिए यह योजना है।
- **वेबसाइट पर उनके चित्र:** कैटलॉग उपलब्ध कराने के लिए देश भर के संग्रहालयों में कला वस्तुओं का डिजिटलीकरण और; संग्रहालय पेशेवरों का क्षमता निर्माण।
- **पुस्तकालयों और अभिलेखागार का विकास:** राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन (एनएमएल) का उद्देश्य भारत का एक राष्ट्रीय वर्चुअल पुस्तकालय स्थापित करना, मॉडल पुस्तकालयों की स्थापना, पुस्तकालयों का मात्रात्मक/गुणात्मक सर्वेक्षण और क्षमता निर्माण करना है। सभी राष्ट्रीय,राज्य और जिला स्तर के पुस्तकालयों को मॉडल पुस्तकालयों के रूप में विकसित किया जाना है, इन पुस्तकालयों को आर्थिक रूप से पिछड़े जिलों में विकसित करने पर जोर दिया जाना है। इसके अलावा, राज्यों के जिला पुस्तकालयों को नेटवर्क कनेक्टिविटी प्रदान की जाएगी। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग की सिफारिशों के अनुसरण में पुस्तकालयों और सूचना सेवाओं का सतत विकास करना उद्देश्य है। साथ ही सभी पुस्तकालयों में सूचना संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) एप्लिकेशन को बढ़ावा देना पुस्तकालय प्रबंधन का आधुनिकीकरण, पुस्तकालयों और नागरिकों का एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण और प्रशिक्षण के माध्यम से पुस्तकालय पेशेवर क्षमताओं में सुधार करना है भी उद्देश्यों में शामिल है।
- **वैश्विक जुड़ाव और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** विदेशों में भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देना भारत के साथ अन्य देशों के संबंधों को मजबूत करना। द्विपक्षीय सांस्कृतिक संपर्कों को बढ़ावा देना विदेशों में भारत की सांस्कृतिक छवि को प्रोजेक्ट करना; तथा पर्यटन को बढ़ावा देना।
- **पांडुलिपियों पर राष्ट्रीय मिशन:** राष्ट्रीय स्तर के सर्वेक्षण के बाद पाण्डुलिपियों का पता लगाना। एक राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस के लिए प्रत्येक पांडुलिपि और पांडुलिपि भंडार का दस्तावेजीकरण करें, जिसमें वर्तमान में चार मिलियन पांडुलिपियों की जानकारी है, जो इसे दुनिया में भारतीय पांडुलिपियों पर सबसे बड़ा डेटाबेस बनाता है। पाण्डुलिपियों का संरक्षण करना जिसमें पाण्डुलिपि संरक्षकों की एक नई पीढ़ी के संरक्षण और प्रशिक्षण के आधुनिक और स्वदेशी दोनों तरीकों को शामिल किया गया है। एवं अगली पीढ़ी के विद्वानों को पाण्डुलिपि अध्ययन के विभिन्न पहलुओं जैसे भाषाओं, लिपियों और आलोचनात्मक संपादन और ग्रंथों के कैटलॉगिंग और पांडुलिपियों के संरक्षण में प्रशिक्षित करना। दुर्लभ पांडुलिपियों को डिजिटाइज़ करके पांडुलिपियों तक पहुंच को बढ़ावा देना। अप्रकाशित पांडुलिपियों और कैटलॉग के महत्वपूर्ण संस्करणों के प्रकाशन के माध्यम से पांडुलिपियों तक पहुंच को बढ़ावा देना, और व्याख्यान, संगोष्ठियों, प्रकाशनों और अन्य आउटरीच कार्यक्रमों के माध्यम से पांडुलिपियों के साथ जनता के जुड़ाव को सुविधाजनक बनाना।

निष्कर्ष:

डिजिटल युग में, भारत की समृद्ध लोक साहित्य और संस्कृति के संरक्षण एवं पुनर्जीवित करने के अनगिनत अवसर मौजूद हैं। भारत का इतिहास प्राचीन लोक परंपराओं से भरा हुआ है, जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक रूप, जैसे कि लोकगीत, कहानियाँ, और नृत्य शामिल हैं। डिजिटल तकनीकों, जैसे कि इंटरनेट, सोशल मीडिया, और डिजिटल आर्काइविंग, ने लोक साहित्य को अधिक सुलभ और लोकप्रिय बनाने के लिए नए द्वार खोले हैं। इस संगठित डिजिटल संस्कृति के माध्यम से, कलाकार और समुदाय अपनी सांस्कृतिक धरोहर को साझा करने, नया जीवन देने और आर्थिक अवसर पैदा करने में सक्षम हो रहे हैं। डिजिटल संरक्षण के माध्यम से लोक कथाओं और संस्कृति का संरक्षण सुनिश्चित किया जा रहा है, जिससे कि भविष्य की पीढ़ियाँ भी इससे जुड़े रह सकें। डिजिटल कॉमिक्स और ई-शोध जैसे साधनों ने शैक्षणिक रिसर्च में सहायता प्रदान की है। हालांकि, यह डिजिटल युग मानसिक स्वास्थ्य, गोपनीयता, और साइबरबुलिंग जैसी चुनौतियों भी लेकर आया है। भारत सरकार ने कला और संस्कृति के संरक्षण के लिए कई योजनाएँ बनाई हैं, जैसे कि शताब्दी महोत्सव, कला संस्कृति विकास योजना, और पांडुलिपियों का राष्ट्रीय मिशन। ये सारी पहलकदमी लोक साहित्य और संस्कृति को डिजिटल युग की चुनौतियों के बीच जीवित रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं और इस प्रक्रिया में, ग्रामीण और क्षेत्रीय समुदायों के भी अधिकारों और आवाज़ों को सुरक्षित रखा जा रहा है।

संदर्भ सूंची:

1. चौरसिया, गोपी चंद. डिजिटल युग में लोक संस्कृति, मानवीय मूल्य एवं आंचलिक साहित्य, अपनी माटी (2024). https://www.apnimaati.com/2024/12/blog-post_710.html (जनवरी 2026).
2. https://www.ndl.gov.in/ (जनवरी 2026).
3. https://ignca.gov.in/hi/ (जनवरी 2026).
4. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/ (जनवरी 2026).
5. https://ich.unesco.org/en/home (जनवरी 2026).
6. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1807917&reg=3&lang=2 (जनवरी 2026).
7. https://www.hindivyakran.com/2023/01/lok-sahitya-ka-arth-paribhasha-aur-swaroop-spashta-kijiye.html (जनवरी 2026).
8. https://www.britannica.com/art/folk-literature (जनवरी 2026).
9. https://www.google.com/ (जनवरी 2026).